ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS:

शैक्षिक नवाचार के अर्थ, परिभाषा, विशेषता एवं आवश्यकता का अध्ययन

राहुल बधाला

शोधार्थी शिक्षा विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़

प्रस्तावना :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका संपूर्ण विकास समाज में ही संभव है। विकसित समाज के लिए यह आवश्यक है कि उसका प्रत्येक नागरिक शिक्षित एवं जागरुक हो। शिक्षित मनुश्य उपयोगी एवं व्यावहारिक ज्ञान का भण्डार रखता है। ज्ञान की प्राप्ति आजीवन चलने वाली शैक्षिक प्रक्रिया से होती है। शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। विद्वानों ने इस प्रक्रिया के तीन अंग माने हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यवस्तु। इन तीनों अंगो में शिक्षक का स्थान सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। यद्यपि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में बालक को शिक्षा की प्रक्रिया में प्रथम स्थान देने की बात कही गई है, लेकिन सही मायने में इस प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु शिक्षक होता है। शिक्षकों का महत्व बताते हुये श्री एच0जी0 वैल्स ने लिखा है कि ''अध्यापक इतिहास का वास्तविक निर्माता है।''

बूबेकर के षब्दों में ''सभ्यता की उन्नति शिक्षक की योग्यता पर निर्भर करती है।'' जॉन एडम्स के अनुसार '' शिक्षक मनुश्य का निर्माता है। ''

सीखने सिखाने की प्रक्रिया आदिकाल से चलती आ रही है। मानव का जीवन ही शिक्षा है। प्राचीन काल में शिक्षक का चयन प्रायः परिस्थितियों से निर्धारित किया जाता था। उस समय यद्यपि शिक्षकों के गुणों का विश्लेषण नहीं किया जाता था फिर भी कुछ ऐसे ही व्यक्ति शिक्षक बनते थे जिनमें शिक्षण कार्य के लिए कुछ प्रवृत्तियाँ या अभियोग्यताएँ होती थीं। इनमें ज्ञान एवं नेतृत्व सामान्य गुण रहते थे। समाज के विकास के साथ–साथ शिक्षकों की आवश्यकताएँ बढ़ती गई और शिक्षण का उद्देश्य एवं स्वरूप भी परिवर्तित होता गया। मध्यकाल में प्रायः यह एक व्यवसाय बन गया। उसके बाद शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे लोग आये जिनमें इसके लिए कोई विशेष अभियोग्यता नहीं थी। किसी अन्य व्यवसाय में कोई अवसर न मिलने के कारण वे अध्यापन में आने लगे। इस कारण शिक्षा की प्रक्रिया में बहुत से दोष आ गये।

किसी भी समाज की उन्नति उसमें रहने वाले व्यक्तियों पर निर्भर होती है। समाज को उचित दिशा देने हेतु शिक्षा की आवश्यकता को सदैव ही स्वीकार किया गया है। प्रत्येक देश, काल व परिस्थिति में शिक्षा के महत्व को अनुभव किया जाता रहा है। शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुए समाज द्वारा शिक्षा की प्रक्रिया को निश्चितता प्रदान करने का प्रयास किया गया। शिक्षा की इस प्रक्रिया में मुख्य रूप से तीन पक्ष सामने आये– शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम। शिक्षा की इस प्रक्रिया के इन तीनों पक्षों को ही महत्वपूर्ण माना गया है, लेकिन शिक्षक को इस प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष स्वीकार किया गया। यद्यपि वर्तमान मे शिक्षार्थी को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है, लेकिन शिक्षक का महत्व पूर्व की तरह आज भी बना हुआ है और यह आगे भी बना रहेगा।

शिक्षाविद् नेल्सन एल0 बासिंग के षब्दों में ''किसी भी शिक्षा योजना में मैं शिक्षक को निर्विवाद केन्द्रीय स्थान देता हूँ।''

शैक्षिक नवाचारों से संबन्धित पृश्ठभूमि :

परिवर्तन ही सृष्टि का शाश्वत नियम है। परिवर्तन से सृष्टि में नवीनता आती है। प्रतिक्षण सृश्टि मे परिवर्तन हो रहा है। पेड़ों पर मृदु कोपलें निकलती है जो हरे पत्तों का रूप धारण करती हैं। हरे पत्ते पीले पत्तों में परिवर्तित हो जाते है। फिर पीले पत्ते भी सूख कर झड़ जाते है और इनके स्थान पर फिर नये पत्ते आ जाते है। पेड़ों की टहनियों पर पहले नन्ही–कलिकाएँ प्रादर्भूत होती हैं। वे सुन्दर सुगन्धित पुष्प का रूप धारण करती हैं। पुष्प पहले मुरझाता है और फिर सूख कर हवा के झोकों से बिखर जाता है। प्रकृति की यह नित्य नयी नवीनता हमें सदा आकर्षित करती रहती है। प्रकृति की इस चिर नवीनता की पृष्ठभूमि में परिवर्तन की प्रमुख भूमिका रहती है। समय परिवर्तनषील है और ब्रहमाण्ड की प्रत्येक वस्तु को यह अपने आगोश में ले लेता है।

परिवर्तन प्रकृति तक ही सीमित नही है। समाज में भी प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। पुरानी मान्यताओं का स्थान नवीन मान्यताएं ले रही हैं। पुरातन मूल्यों का स्थान, नूतन मूल्य ग्रहण कर रहे हैं। जल स्थिर रहेगा, तो जल सड़ेगा ही। यदि जल का प्रवाह जारी रहेगा– अर्थात् पुराने जल का स्थान, नया जल लेता रहेगा, तो जल शुद्ध बना रहेगा। इसी प्रकार जो समाज स्थिर, यथावत स्थिति में बना रहना चाहता है, नवीन विचारों को ग्रहण नहीं करता है, वह जीवित नहीं रह सकता। नये–नये विचारों को ग्रहण करने से समाज को नया जीवन प्राप्त होता है। उसमें नयी स्फूर्ति आती है और वह सदा अग्रणी स्थान प्राप्त करता है। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। इससे प्रत्येक क्षेत्र की कार्य प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन आया है। शिक्षण की वैज्ञानिक विधियों एवं संसाधनो ने शिक्षा के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है।

ज्ञान– विज्ञान के इस युग में हर क्षेत्र में परिवर्तन–युक्त नित नये–नये अविष्कार हो रहे हैं जिसकी अपनी गरिमा एवं महत्व है। समाज के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन युक्त नवीन विचारों एवं आविष्कारों को आत्मसात् करने से इन सबको नयी स्फूर्ति, नया स्वरूप एवं विकास के नये रास्ते मिले हैं। अतएव परिवर्तन युक्त वे साधन एवं माध्यम जिन्होने व्यक्ति के व्यवहार में नवीनता युक्त तथ्यों, मान्यताओं, विचारों का बीजारोपण करके व्यक्ति को नवीन प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख किया है, नवाचार कहलाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु नये–नये साधन एवं विधियों को शैक्षिक नवाचार कहते हैं।

नवाचार' आँग्ल भाषा के – 'इन्नोवेशन' (Innovation) शब्द से बना है जिसकी उत्पत्ति 'इन्नोवेट' (Innovate) शब्द से हुई है। इन्नोवेट शब्द का अर्थ होता है –

(क) to introduce novelties (नवीनता लाना)।

(ख) to make changes (परिवर्तन लाना)।

इस प्रकार 'इन्नोवेशन का अर्थ हुआ– 'वह परिवर्तन जो नवीनता लाये'।

'नवाचार, शब्द की विभिन्न शिक्षाविदों ने निम्नलिखित परिभाषाएँ दी है:–

नवाचार एक ऐसा विचार, व्यवहार, अथवा पदार्थ है, जो नवीन है और वर्तमान स्वरूप में गुणात्मक दृष्टि से भिन्न है।

– वारनेट, ए.जी.

''innovation is any thought, behavior or thing that is new and is quantitatively different from the existing form.''

- नवाचार वह विचार है, जिसकी प्रतीति, व्यक्ति नवीन विचार के रूप में करे।

– रोजर्स, ई.एम.

''An innovation is an idea perceived as new by the individual,''
- Rogers, E. M.

- नवाचार वह नवीन और विशेष परिवर्तन है, जो समझ–बूझकर किया गया है। उद्देश्य–प्राप्ति की दृष्टि से, यह परिवर्तन, अन्य विधियों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली समझा जाता है।

– माइलैक्स, एम.बी.

''An innovation is deliberate novel specific change which is thought to be more efficatious in accomplishing the goals of a system.''
- Mallax, M.B.

नवाचार की विषेशताएं :

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर नवाचार की विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है–

1. नवाचार एक नवीन विचार है।
2. नवाचार में कोई नवीन विशेषता पाई जाती है।
3. नवाचार एक उद्देष्यपूर्वक किया जाने वाला कार्य है।
4. नवाचार उपयोगिता की दृष्टि से किया जाने वाला कार्य है।
5. नवाचार के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयास किया जाता है।
6. प्रचलित विधियों की अपेक्षा नवाचार को अधिक अच्छा माना जाता है।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में विकसित प्रमुख नवाचार–

- पाठ्यवस्तु में नवाचार :
- दूरस्थ शिक्षा।
- मुक्त शिक्षा।

- पर्यावरण शिक्षा।
- जनसंख्या शिक्षा।
- यौन शिक्षा।
- योग शिक्षा।
- जीवनपर्यंत शिक्षा।
- भविष्योन्मुखी शिक्षा।
- अभिभावक शिक्षा।
- शिक्षा का अर्थशस्त्र।
- शिक्षा की मुक्त पद्धतियाँ
- प्रसार षिक्षा।
- नागरिकता की शिक्षा।
- शान्ति शिक्षा।
- मानवाधिकार की शिक्षा।
- समावेशी शिक्षा।
- महिला शिक्षा।
- प्रौढ़ शिक्षा।
- रोजगारपरक शिक्षा
- स्वयंसेवी शिक्षा।

शिक्षण विधियों में नवाचार :

- कॉपरेटिव लर्निंग।
- ई–लर्निंग।
- डिस्टेंन्श लर्निंग।
- ऑन लाइन स्टडी।
- वर्चुअल क्लासेस।
- स्मार्ट क्लासेस।

परीक्षा प्रणाली में नवाचार :

- ऑन लाइन परीक्षा प्रणाली।
- सेंमेस्टर पद्धति।

शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता :

शिक्षा मनुष्य के विकास की आधारशिला है। यह मनुष्य को तात्कालिक परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति प्रदान करती है। शिक्षा की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को होती है और प्रत्येक मनुष्य अधिक से अधिक गुणकारी शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास करता है, परन्तु समय सापेक्ष शिक्षा को सर्व स्वीकृति प्राप्त है। ऐसी शिक्षा समाज के अनुरूप परिवर्तित होती रहती है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। प्रकृति में नित–प्रति परिवर्तन हो रहे हैं। समाज भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा है। समाज के परिवर्तित स्वरूप के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है। मनुष्य की बढ़ती भौतिक आवश्यकताएँ, समय का अभाव एवं धन इकठ्ठा करने की लालसा ने शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में आमूल–चूल परिवर्तन ला दिया है। शिक्षा को समय सापेक्ष बनाने के लिए इसमें नवाचारों का उदय हुआ है। संक्षेप में शिक्षा में नवाचारों की आवश्यकता को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. इससे धन, समय एवं श्रम की बचत होती है।
2. इससे एक साथ सभी को दिशा प्रदान की जा सकती है।
3. इससे प्रत्यक्ष एवं स्थाई ज्ञान प्रदान करने में सहायता मिलती है।
4. शैक्षिक नवाचारों की सहायता से अधिगमकर्ता को क्रियाशील बनाया जा सकता है तथा अधिगम हेतु उसे प्रेरित किया जा सकता है।
5. इसके माध्यम से शिक्षा को समय–सापेक्ष परिवर्तनषील बनाया जा सकता है।
6. शैक्षिक नवाचारों की सहायता से विद्यार्थियों में अन्तर्निहित क्षमताओं की पहचान की जा सकती है तथा उनका पूर्ण विकास किया जा सकता है।
7. बढ़ती हुई जनसंख्या के अनुरूप शिक्षा सुविधाओं में वृद्धि करने के लिए।
8. विभिन्न शैक्षिक इकाइयों में समन्वय स्थापित करने के लिए।
9. शीघ्र एवं सटीक मूल्यांकन के लिए।
10. शिक्षा के गुणात्मक एवं मात्रात्मक विकास के लिए।
11. बच्चों को वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान प्रदान करने के लिए।
12. शिक्षा को सार्वजनिक एवं आसान बनाने के लिए।
13. प्रजातान्त्रिक मूल्यों की स्थापना करने तथा उनका विकास करने के लिए।
14. पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों में नवीनता लाने के लिए।
15. बच्चों को रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करने के लिए।
16. शिक्षकों का स्वमूल्यांकन करने के लिए।
17. विद्यालयी वातावरण को अधिगम सापेक्ष बनाने के लिए।
18. पाठ्य–सहगामी क्रियाओं को सुचारु रूप से संम्पन्न करने के लिए।
19. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए।
20. संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया को गतिषील बनाने के लिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. जीत, योगेन्द्र भाई (2006). शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृत्तिया अष्टम् संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पृष्ठ संख्या–57
2. सिंह, आर.आर. (2007). नैतिकता के लिए शिक्षा. जयपुर : आर.वी.एस.एस पब्लिशर्स. पृष्ठ संख्या–23
3. थानवी, रमेश (2003). किसे कहते हैं अध्यापक जयपुर : अनौपचारिका, राजस्थान प्रौढ़ शिक्षा समिति
4. डा. त्यागी, बी.डी. (2010). प्रसार शिक्षा एवं सामुदायिक विकास रामा पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
5. हकीम, एम.ए. और अस्थाना, विपिन (1994). मनोविज्ञान की शोध विधियाँ. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या–169
6. यादव, एम.आर. अनुसंधान परिचय. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर. पृ.सं. 74
7. व्यास, हरिषचन्द्र. (2001). हम और हमारी शिक्षा. जयपुर : पंचषील प्रकाषन चौड़ा रास्ता. पृ. सं. 17
8. त्रिवेदी, आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (2008). रिसर्च मैथ्डोलॉजी. जयपुर : कॉलेज बुक डिपो. पृष्ठ संख्या 321
9. दासवानी, प्रारम्भिक शिक्षा एक सार्वजनिक रिपोर्ट, यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1996
10. अम्बस्ट व रथ, प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास, प्रथम संस्करण, 2010, आर.एस.ए. इण्टरनेशनल, आगरा,